दोहा।

आवत में आलिन लख्यौ मिले न इत ब्रजराज।

झंझट में कामिनि परी इत मनोज उत लाज ॥४४॥

अथ प्रौढ़ा बिप्रलब्धा की उदाहरण सवैया।

साजि सिंगार अनूपम अंग कुरंगदृगी पति भौन गई है। त्यौंही अनंग तरंगन ते नंदराम रंगीले के रंग रई है॥ आंखिन ते अँसुवां उमड़े न तहां नंदलाल ते भेंट भई है। गाढ़े उरोजन को गहि कै अधरान को दाबि उसास लई है॥ ४५॥

दोहा।

रंगमहल कामिनि गई कन्त मिलन के काज।

मिलि न गजगामिनि तिया धरी मैनमृगराज ॥४६॥

अथ परकीया बिप्रलब्धा कबित्त।

आई नन्दलाल के मिलाप को रसाल बाल तरल तमाल ताल तीर त्रास ख्वै गयो। पायो ना सहेट मैं छबीली वा छबीलो छैल छोलि गई छाती मैं छुरी को छेक छ्वै गयो॥ नन्दराम काम त्यौं अकेली करि पाई बांम धरि कै मरोरी बल आनंद निच्वै गयो। आवत मैं एक पग भयो ना निकुंज भौन जात मैं करोरि कोस कामिनी को ह्वै गयो॥

दोहा।

अँधिआरी कारी लता गई तहाँ सुकुमारि।

मिलें न मदन गोपाल हैं डारी मदन पछारि॥ ४८॥

अथ गनिका विप्रलब्धा का उदाहरण—सवैया।

बारबधू पति गेह गई बनि बांदो लवाइ लई जुग साथ में। ह्वां न मिले नँदराम लगी तब सोचन प्रीति करी ब्रजनाथ में॥ सोई तौंह्व न चहै सखि ता दिन जा दिन जौन लिखो बिधि माथ में। आस करी बहुते धन की तेहि ते न परो तनकौ सखि हाथ में॥ ४९॥

दोहा।

कहां पयानो मैं करौं भयो रैनि रँग फीक।
याही ते सखि होत नहि एक पयानो ठीक॥ ५०॥

अथ उत्कण्ठिता लक्षण—दोहा।

केलि थली गत कामिनी पीतम आयो नाहि।
आवन की चिन्ता करै उत्कण्ठिता सराहि॥५१॥

अथ मुग्धा उत्कण्ठिता को उदाहरण—सवैया।

नौलबधू नटनागर की मग हेरत हेरि हिये अकुलानी।
सोच करै मनहीं मन बाल कहां बिलमो दुख मो सरसानी॥
और के धाम गयो नँदराम यहै समुझे उर पीर पीरानो।
पौढ़ि रही पलँगा पछरात सखीसन बात गई न बखानी॥

अथ मध्या उत्कण्ठिता को उदाहरण—सवैया।

साँझहि ते नँद नन्दन मारग देखि रही वृषभानकि ग्रोरी। जामिनि बीति गई जुग जाम भई नन्दराम बिथा मति भोरी॥ सेज परी उलटै पलटै सफरी मनो वारि बि-

हीन बहोरी। आँसु उसाँस दोउ उमहे सो परी पलँगा गिरि मैन मरोरी॥ ५३॥

दोहा।

लोचन कोरन मो सलिल जोरन रह्यो उमाहि।
बोली सखि पीतम कहां रह्यो रह्यो सुख माहि॥५४॥

अथ प्रौढ़ा उत्कण्ठिता को उदाहरण—सवैया।

आजु मनोहर रूप बनाइ भली वृषभानसुता अनुरागी। त्यों नन्दराम मनोज के ओजन जामिनि जामन जीवत जागी। खेलत ही सतरञ्ज यहां तुमरे उर खेलन की रुचि पागी। जात लला रजनी बितये अब पाय नहीं परिबो कर लागी॥ ५५॥

दोहा।

इत पीतम अपराध लखि करत मनहिँ मन मान।
उत मनोज की ओज ते उतरि जात अभिमान॥५६॥

अथ परकीया उत्कण्ठिता को उदाहरण—कवित्त।

अँगन अनङ्ग रङ्ग अंगना उमङ्गभरी जाइ कै उमङ्गभरी भानुजा के ओखा मैं। फूलि रहे फूलन के वृन्द मकरन्दजुत चौगुनो अनन्द त्यों मयूरन के घोखा मैं॥ नन्दराम कामिनी बिराजत लतान तर चौंकि चौंकि परै नँद नन्दन के धोखा मैं। दाबि कै दुकूल ताको मारि मैन सूलन को झारि १ फूलन को झाँकती झरोखा मैं॥ ५७॥

दोहा।

मै कहि आई कन्त सों जात सघन बन पुञ्ज ।
सुनो न मेरी बात को गयो औरही कुञ्ज ॥ ५८ ॥

अथ गनिका उत्कण्ठिता को उदाहरण—कवित्त ।

बाम अभिराम कामकन्दला सी बङ्गला में कलित कपोल कल कुण्डल धरत है । आये नाहि कन्त यामिनी को अन्त आवत है ऐसो कौन काज ब्रजराज बिसरत है ॥ कान्ह बिन कामिनी के काम को मरोर होति उठि उठि ठाढ़ी होत बैठत परत है । कहै नन्दराम धन धाम काम बार बार गिरदा कि और मानो सिरदा करत है ॥ ५९ ॥

दोहा।

पीतम दूत आये नहीं सखि आई पछरात ।
खोलि खोलि धन दान धन गनि गनिका पछितात ॥

अथ बासकसज्जा लक्षण—दोहा।

रङ्गभवन पति आगवन गनि अति हर्षित होइ ।
साजे सेज सिंगार तन बासकसज्जा सोइ ॥ ६० ॥

अथ मुग्धाबासकसज्जा को उदाहरण—सवैया।

सुन्दर मन्दिर सेज सजी पुनि आली नई दुलही को सँवारे । अङ्ग अभूषण भूषित कै नंदराम हरे हरे अम्बर धारे ॥ बाँधत मैं बंद कञ्चुकी के सतरात कछू मुसुकात निहारे । दासी सजे जेहरी जबलौं तबलौं पिय आरसी ओर निहारे ॥ ६१ ॥

दोहा।

जान्यो पीतम आजु गृह ऐहैं अवसि लजाइ।
तोरि धरी रसना लली साँझहि ते सकुचाइ ॥६२॥

अथ मध्यावासकसज्जा लक्षण—सवैया।

धारत है क्रम ते अँग भूषण दूषणहीन कहूं बिसरै ना।
त्यों नन्दराम दुकूलन फूलन का बित फिनहुं सेज सरै ना॥
छोरि धरी रसना दसना पर पायन मैं बिछियान करै ना।
यों सजनी सजनी सजि कै रजनी बजनी गजनी पहिरै ना॥

दोहा।

बिन सिंगार सिंगार मैं कीन्हों अमित सिंगार।
जिमि सुरसरि कैलास गत पुनि शङ्कर सिर धार ॥६४॥

अथ प्रौढ़ा बासकसज्जा को उदाहरण—कवित्त।

चहचहे चोवा ते चुपरिकारे कुन्तल कलित कलप द्रुम के फूलन सँवारि कै। कुण्डल हलक झाँई झलक कपोलन मैं प्रानिप फलक झकझक झोंक मारि कै॥ अन्तर चभोरी कुच कञ्चुकी बिराजमान भृकुटी कमान बान नैनन निहारि कै। कहै नन्दराम कामकामिनी कहानी कहा कमला लुकानी छीरसागर सुधारि कै॥ ६५॥

दोहा।

कारे कच दामिनि लसत मुख मैं मृगमद पङ्क।
श्यामघटा बिद्युत् छटा मधि मैं उदित मयङ्क ॥६६॥

अथ परकीया वासकसज्जा—कवित्त।

कोमल कुटीर कुञ्ज कुञ्ज के दलन पर तोरि तोरि पाखुरी बिछावत कमल की। तानि दई चादरि चहूंघा चित चायन सों चमकै किनारीदार सारी मल मल की॥ नन्दराम बाम रची रचना गुलाबी गुल गहगही झालर गुलाब गुलहल की। रम्भा सी तिलोतमा सी मैनका सी इन्दरा सी इन्दु की कला सी चपला सी बसी ललकी॥६७॥

दोहा।

बीनि बीनि कोमल कुसुम रचत सेज सुकुमारि।
करनिकार किंजाल के करि बैठी बर नारि॥६८॥

अथ गनिका वासकसज्जा—कवित्त।

बूटेदार तोशक तमासा सी बिछाई बाल तीर तीर तकिया धराई मखमल की। बायें पर पीकदान अतर गुलाबदान पानदान दाहिने खवासी पले पल की॥ नन्दराम कामिनी अतर तर कीन्हें बास केश पास गुंफित सुफित झोप झलकी। कुरसी बनकवारी तापै चढ़ि बैठी बाल ओठन मिठाई त्यों ललाई परै छलकी॥६९॥

दोहा।

बड़े बड़े दृग दोउन मैं नेसुक अंजन दीन।
खंजरीट से नयन जुग कंजरीट सों कीन॥७०॥

स्वाधीनपतिका लक्षण—दोहा।

जाके सील सरूप पर रहत कन्त आधीन ।
स्वाधिनपतिका नायिका ताहि कहत परबीन ॥ ७१ ॥

मुग्धा स्वाधीनपतिका उदा॰—कवित्त।

एरी वा सकोचन गड़ी सी जात आलिन मैं हौसहू मैं नैंन अरबिन्द तौ न खिलतै। हरे लाल वाकौं तौन घूंघट उघारि ताकि तोरि तोरि तिनुका सिहात सुख मिलतै। जा दिन ते पवरि पर पांव दीन्हो पालको ते नन्दराम ता दिन ते धाम ते न हिलतै। नैनन की पूतरी सी नैन तें न न्यारी करै जीवन की मूरि सी न दूरि करै दिल तै॥७३॥

दोहा।

बदरी सी चादरि लली लखो चन्द मुख तोर।
दुख सुख साने से रहत पीतम नयन चकोर ॥ ७४ ॥

मध्या स्वाधीनपतिका उदाहरण कवित्त।

कामकामिनो सी ब्रज भामिनी को हाल आली आली सी हंसत उर सुख ना समात है। सासु के न आगे वासो घूंघट उघारो जात आपनेइ हाथ हरि बेनी गुहि जात है॥ ताको करै नन्दराम सामुहे कपोलन के एक ते सरस एक प्रीति सरसात है। नेक जो सकोरै मुख पान की तिखाई ताकि प्यारि के बदन पियराई परि जात है॥ ७५ ॥

दोहा।

निरवधि प्रीति गोपाल की क्यों मोसो कहि जात।
कंज पाखुरी पग धरत मुख श्रम कर दरसात॥ ७६॥

प्रौढ़ा स्वाधीनपतिका उदा॰ सवैया।

तो तन पानिप सागर के किधौं पीतम के दृग मीन चकोर हैं। मोदित होत निरन्तर ये किधौं कुन्तल श्याम घटान के मोर हैं॥ त्यों नँदराम रहैं मड़रात किधौं तुव आनन पंकज भौंर हैं। चोखे चितौतहि तौ तरसैं मनमोहन धौं मुखचन्द चकोर हैं॥ ७७॥

दोहा।

वा तन पानिप सिन्धु के कन्त नयन जुग मीन।
क्यों करि आवै सासु पहँ बिछुरत होत मलीन॥७८॥

अथ परकीया स्वाधीनपतिका उदा॰ कबित्त।

येहो नन्दलाल बांसुरी को ना बजायो करो लै लै मेरो नाम नेह रावरे छिपाउँ है। नंदराम फेरि फेरि आवत हो याहो गैल सैल ब्रजठाकुर अठाइन को ठांउ है॥ हाथ जोरि जोरि के बोलावत हौं कुंजवन लाल रोज रोज मिलिबे को तौ न दाँउ है। मेरे जू चरनचिन्ह धूरि दृग लावत हो जानि जैहै चातुर चवाई ब्रज गाँउ है॥ ७९॥

दोहा।

लाल कहा पायन परत बेनी गूथन काज।
हंसि हंसि ब्रजबनिता कहत अधिक सोहाती आज॥

गनिका स्वाधिनपतिका उदा० सवैया ।

आपुहि बार सँवारत साँवरो साजत मोहन मंजु कड़े रहैं । त्यों नन्दराम छबीलो छलान सुधारत धारत छोनि छड़े रहैं ॥ सारी निसा मुख जोवत जागत बासरहू पिय पास पड़े रहैं । पान खवावत आदर सों अति आरसी लै अलि आगे खड़े रहैं ॥ ८२ ॥

दोहा ।

कुण्डल तन ताको करैं तेरे गोल कपोल ।
नित नित नूतन आभरन आनत असित अमोल ॥

अभिसारिका लक्षण दोहा ।

सजि सिंगार पति भौन को गौन करै जो नारि ।
ताहि कहत अभिसारिका कबिवर सुमति बिचारि ॥

अथ मुग्धा अभिसारिका को उदा० कबित्त ।

साजि नवनागरि को संग लै सहेली चली बातन भुराय भोरी भीति मैं भरत है । द्वै पग धरत मैं घरीक फेरि ठाढ़ी होत अंचल सखीन के सुधारि पकरत है ॥ कहै नन्दराम छल बलन छबीलो जात धरकत छाती उर धीर ना धरत है । पन्थ कों थकी सी यों जकी सी उझकी सी बाम आगे को धरत पग पीछे को परत है ॥ ८५ ॥

दोहा ।

आली अमित उपाइ करि लै गवनी पति पाह ।
अचढ़ नीर ज्यों खेत को लिये जात खेतवाह ॥ ८६ ॥

मध्या अभिसारिका उदा॰ कबित्त।

कीन्हो है सिंगार नख सिख लौं कुरंगनैनी अंगना अनूप अंगराग अंग घसि कै। कंचन की बेली सी अकेली चली केलि भौन करिकै मनोरथ रसीले रस रसि कै॥ मन्द मन्द चोरी सी करत जात चन्दमुखी नन्दराम कोठे के समीप गई लसि कै। एक पांव सीढ़ी पै मनोज मजबूत गहे एक पांव भूतल में लाज गहे कसि कै॥ ८७॥

दोहा।

अतन तुरंग सँवारि तिय कर में लाज लगाम।
धरि धरि मोरत मुरत नहिं पौछे प्रेम दमाम॥ ८८॥

प्रौढ़ा अभिसारिका को उदा॰ कबित्त।

पावस निसा में चली पावस निसा सी बनि अंगना अनोखी अंग पावसी उठानि कै। लांबे लांबे केश बेश छाजत नितम्बन लौं करत पराजे साजे सावनी घटानि कै॥ कहै नन्दराम फूल बुंद से झरत जात मधुर मधुर घोषा भूषण रटानि कै। हार धारधार धौल सोभा उफनात जात मन्द मुसकात छटा छूटत छटानि कै॥ ८९॥

दोहा।

गये मनोरथ प्रथम चलि आपु रही मगमांह।
रीति प्रीति बिपरीति सुख करन लगी पति पाह॥

परकीया अभिसारिका उदा॰ कवित्त।

मानौ री परोसिनि न येती अतुराई करी गांव के चवाई लोग चौंचदी पचन दे। जागा करै जौ लगि जेठानी जीव घातक सी तौ लगि मनोभव कि तपनि तपन दे॥ कहै नंदराम त्यों अध्यारी नेक आवन दे छावन दे चोख चोखी चन्द्रिका खपन दे। जैहौं छबि छाकर सिँगार दस छाकर त्यों छैल पै छपाकर छपारन छपन दे॥ ८१॥

दोहा।

कैं बैरी के मित्र मुख सुख दुख को दातार।
क्यों छपिहै सखि रैन को मग दरसावनहार॥ ८२॥

परकीयाशुक्लाभिसारिका उदा॰ कवित्त।

गोरे गोरे गात गरे फूलन के हार मुकताहल अपार गूंधे मांग की तयारी मैं। हीरा की कनी सी दांत मन्द मुसुकात जात सोभा सरसात मुख चन्द की उज्यारी मै॥ शरद की चांदनी मे चांदनी सी फूलरही फावित फराक दुति सेत रंग सारी मै। नंदराम अंग अंग राग रूप रोचन की फैलगई चमक चहूँघा फुलवारी मै॥ ८३॥

दोहा।

शरद रैन में शशिमुखी चली अली के संग।
मनु समीर सँग छीरनिधि गवनी छीर तरंग॥ ८४॥

परकीया अरुनाभिसारिका कवित्त।

लाललाल अंबर अनोखे नैन लाललाल लाललाल अधर ललाई है दसन मैं। लाले लाले रेशम के फूल ऐसी केशन मैं छाइ रहे छाती पर छाजत कुचन मैं॥ लाल लाल करन विराजैं कंज लाल लाल लाल लाल चरन चमक मुकुतान मैं। कहै नन्दराम बाम रूप की रसाला आला हेम कैसी माला ब्रजबाला चली बन मैं॥ ६५॥

दोहा।

अरुण चरण की अरुनता अनुपम दुति दरसाति।
उदयकाल की अरुनता सुखमा लखी न जाति॥६६॥

परकीया पीतमअभिसारिका उदा॰ कवित्त।

पीरे पीरे गोलन कपोलन बिराजि रहे पीरे पीरे कुन्तल दुचन्द दुति दरसै। पीरे पीरे हार उर गेंदा गुलदावदी के पीरे पीरे कुसुम सुकेश छबि सरसै॥ पीरे पीरे केसरि के अंगराग अंगन मैं पीरे पीरे पौन तैं पराग पुंज परसै। नंदराम पीरे पीरे किंसुक झरत जात मानो प्यारी अंगन ते पीरो रंग बरसै॥ ६७॥

दोहा।

सखि अचरज की बात इक भानत मुख न समात।
हैं कंचन के गिरि गहे कनकलता मग जात॥ ६८॥

अथ परकीया हरिताभिसारिका को उदा० कवित्त।

हरी हरी भूमि जहाँ हरी हरी लोनी लता हरे हरे पात हरे हरे अनुराग मैं। कहै नन्दराम हरे हरे यमुना के कूल हरित दुकूल हरे हरे मोती माँग मैं॥ हरे हरे हारन मैं हरित बहारन मैं हरी हरी डारन मैं हरे हरे भाग मैं। हरे हरे हरि को मिलन जात हरे हरे हरी हरी कुंजन मैं हरे हरे बाग मैं॥ ९९॥

दोहा।

हरियारी हारन लखो हरियारी सुख मूल।
हरियारी कुंजन चली अली संग अनुकूल॥ १००॥

परकीया श्यामाभिसारिका को उदा० कवित्त।

कारी कारी रैन तैसे कारी कारी बादरी मैं कारी कारी सारी कारी कारी कचबेली त्यों। कारे कारे काजर सों कारे करि डारे नैन कारी कारी कंचुकी उरोजन पै मेली त्यों॥ कहै नन्दराम कारो कारो अंगराग अंग कारी कारी बाल या निकारियै पछेली त्यों। कारी कारो कुंज मै तमाल तरु कारे कारे कारे कारे कान्हर पै जात है अकेली त्यों॥ १०१॥

दोहा।

कीन्हे श्याम सिँगार तिय चली श्याम पै जात।
भौंर भीर त्यों तीर मैं अँधियारी अधिकात॥ १०२॥

अथ परकीया दिवा अभिसारिका को उदा० कवित्त।

ग्रीषम दुपहरी में खोलि कै केवार बाल कीन्हो अभिसार डारि भूषण खनक के। कहै नँदराम चौंकि चारी ओर हेरति है डग मग पग परै मग मारे सक के॥ गिरत परत जाति रबि ना लगत तात भूभुरि की कौनि बात काम की तमक के। चोट लागी चौगुनी मदन पीर परै जागि जैसे पथरी में आगि लागी चकमक के॥ १०३॥

दोहा।

जात जलाकन मैं चली बिमल बाल गतिमन्द।
कीन्यो कीन्यो काल मैं होत दिवाकर चन्द॥ १०४॥

अथ गनिका अभिसारिका को उदाहरण कवित्त।

षोड़स सिंगार साजि कीन्हो अभिसार बाल मुख पै चकोर छौना छावत छुटत जात। चोवा चारु सुपरि अँतर तर चीखे चौरु भौंर भौर तीर तीर गंध की लुटत जात॥ नंदराम जहां जहां प्यारी को परत पग ताही ताही ठौर कुमकुमा से फुटत जात। आरसी चटान पर उपमा उदोत होत मानो चारि चारु कंज कंज मैं जुटत जात॥ १०५॥

मालती के माल ती के उरमें बिराजत हैं लाजत हैं मुकुर मयंक सीं कपोल पर। जातरूप रूप जात रूप ती अनूप देखि जात रूप दाम कटि किंकनी बिलोल पर॥ केतकी कमाल केतकीक केतकी सखी सु धारती सुधार ती सुधारती

न बोल पर। नन्दराम बाम घनश्याम के अराम जात चन्द की मरीचिका न बीचिका निचोल पर ॥ १०६ ॥

दोहा।

चली बाल पतिगेह को करिकै सुमन-सिँगार ।
करति मनोरथ आइहौं करि मोतिन के हार ॥ १०७ ॥

अथ प्रवत्स्यत प्रेयसी को लक्षण दोहा।

जैहै कन्त बिदेश को जानि बिकल जो होइ ।
ताहि प्रवत्स्यतप्रेयसी कहत रसिक सब कोइ ॥ १०८ ॥

अथ उदाहरण कवित्त।

जाड़े के बिराम व्याहि लाये बरसाने जाइ आछी भाँति साँवरे व्यतीत भयो जाड़ो ना। कैसे लाल चलिवे को चरचा चलावत हौ छायो गयो व्याह को सिरायो गयो माड़ो ना। फूलहू की मार तो अयोग होत नंदराम मेरो कह्यो मानि ताहि बज्र वेगि ताड़ो ना। हंसिनी को छोनो छोटी नीड़ तै निकारि लायो पींजरा में पालि श्याम सूने भौन छाड़ो ना ॥

दोहा।

पीतम चले बिदेस को बौरन आये गेह ।
अहक बहक रोवन लगी नैहरब्याज-सनेह ॥ १०९ ॥

अथ मध्या प्रवत्स्यत प्रेयसी को उदा० सवैया।

देखि बसन्त बहार बढ़ी बर सौरी समीर सुगन्ध नई है।
ऐसे समै नँदराम बिदेश के गौन के भौन में भेद दई है ॥

लाज मनोजमई दुलही सो लही उर चास उसास लई है।
कान गई चरचा पति जान की जान गई सत जान गई
है ॥ १११ ॥

दोहा।

माँगो बिदा बिदेश को पिय कामिनि उर सोच।
हांहो नांहीं करत मैं तिय को अति संकोच ॥ ११२ ॥

अथ प्रौढ़ा प्रवत्स्यतप्रेयसी को उदा० कबित्त।

आयो है वसन्त बौरे बागन बसो है धूंम बेलिन के पग पुंज पौरे दरसान हैं। गुंजि रहे भौंर ठौर ठौर फूले फूलन मैं पावत समीर मैं सुगंध सरसान हैं॥ नंदराम देखो तौ पपीहरा पुकारत हैं पीउ पीउ प्यारी के पियूष अधरान हैं। कैसे लाल चलिवे की चरचा चलावत हो ऐसे समै ऐसे बैन बान के समान हैं॥ ११३ ॥

दोहा।

जाहु लाल परदेश को साथो संग सुजान।
मारग भलो बताइहैं प्रानप्रिया के प्रान ॥ ११४ ॥

अथ परकीया प्रवत्स्यक प्रेयसी को उदा० कबित्त।

कान सुन्यो कामिनी परोसिनि को माह जात नेवते उछाह कछु वाकी ससुरार है। भूलि गयो खानपान पौरी परि आई अंग कीन्यो मिस पाइ गई वाही के अगार है॥ नंदराम हाल ऐसी वैसी कों बत्यानी नेक ख़ासहि सुनाइ

कहो जात यों अवार है। जादिन परोसिनि तिहारे व्याह बीरन को तादिन हमारे हो तमासा होनहार है ॥११५॥

दोहा ।

मीत गवन सुनि कामिनी गई धाइ पहँ धाइ ।
घसि तमाल कर कवल सों पठई नास लेवाइ ॥११६॥

अथ गनिका प्रवत्स्यत प्रेयसी को उदा० कबित्त ।

फाटि गयो हियरा हमारो ऐसे वैन सुनि जाइहो बिदेश ताहिँ लाख लाइ लाखे जाउ । पौढ़ि परयंक पै उठाइ मोहि पीतपट मेरे अधरान को पियूष नेक चाखे जाउ ॥ नंदराम जात हो बसन्त कन्त आवत है मानिहो न औधि को अधार धाम भाखे जाउ। रावरे बियोग में बिहाल ह्वै हौं नंदलाल प्रान राखिवे को मनिमाल लाल राखे जाउ॥

दोहा ।

मम सोना होना गयो संग रावरे राज ।
सो ना करियो जाइ कै सुख में तुम ब्रजराज ॥११८॥

अथ आगमपतिका लक्षण दोहा ।

आवै पति परदेश ते जा कामिनि को धाम ।
आगमपतिका नायिका ताहि कहत गुणधाम ॥११०॥

अथ मुग्धा आगमपतिका उदा० सवैया ।

मीत बधू पतिप्रान बिदेश ते आयो सँकोच के ठौर धरे हैं। श्रौनन में गयो बोला सुधा सम लाज ते सौंहैं न

सीस उठें हैं॥ त्यों नँदराम निहारि सकै नहि देखन को तलफैं दृग द्वै हैं। कानन को पति आयो घरै अखियाँन को मानो बिदेशहि गो हैं॥ १२०॥

दोहा।

आयो कन्त बिदेश ते तिय उठि भागो भौन।
दुरि दुरि देखत दूरि ते लली भौन के कौन॥ १२१॥

अथ मध्या आगमपतिका उदा॰ कबित्त।

आये हैं बिदेश ते बिहारी बनै बानक से बैठि गये अंगन अनंग छबि झलको। दौरि आईं देखन कुटुम्बवारी नारी सब झांकि झांकि हेरत हठोले त्यों महल की॥ कहै नंदराम कुच कंचुकी करेरे परे नैन नचैं निपटि निहारे ये बिकल को। ओढ़नी गिरत वारि भीतर उतारि धरी ओढ़ि कै निकसि आई सारी मखमल की॥ १२२॥

दोहा।

आयो कंत बिदेश ते गई केलिग्टह बाल।
कुशल प्रश्न पूछत सकुच मूंदे नैन रसाल॥ १२३॥

अथ प्रौढ़ा आगमपतिका उदाहरण कबित्त।

आये प्रानप्यारे परदेस ते पियारी-अैन मैन के उमंग अंग अंग बररान लगी। आतुरी उताल पोरी चातुरी की आंखिन में आनद के आंसुन सो नैन तररान लगी॥ ढोली ढीली कंचुकी कसीली भई कामिनी की देहँ की दुनाई ते

दुमोड़ी दरसान लगी। नंदराम खोज ना बियोग को मनोज ओज अंगिया के अंतर उरोज चररान लगी ॥ १२४ ॥

दोहा।

जुग सम बितवत दिन रही जब लौं पिय परदेश।
आये पर पल हैक हूं भये सहज जुग पेश ॥ १२५ ॥

अथ परकीया आगमपतिका उदाहरण कबित्त।

काहू कह्यो आये घनश्याम घर घायल सों दौरि गई मुदित अटारी के अटान पै। झांकि के झरोखे ते दुचंद दुति बार बाम देखी भीर गोपन की नंद के मकान पै॥ नंदराम लपटि उताहिली अनोखी नारि खिरिकी समीप गई मिलवे कशान पै। ताला बिन बाला करि आला खिरकी के पट पीछे को बिलोकै गई प्रानन के प्रान पै ॥ १२६ ॥

दोहा।

आवतही ब्रजराज के बाम छोड़ि सब काम।
घनी घनी सोचन लगी कुंजकुटी अभिराम ॥ १२७ ॥

अथ गनिका आगमपतिका उदा॰ सवैया।

आये बिदेश ते बारबधू-पति बार न गौनी रही मग जोवत। बैठि गयो परयंक पै अंक भरी तिय के तन ताप सो खोवत॥ यों नँदराम कहा लौं कहौं धन के धन के अभिलाखन खोवत। ज्यों ज्यों पिया कुचमंडल टोवत त्यों त्यों तिया पिय गांठि टटोवत ॥ १२८ ॥

कवित्त।

जा दिन ते बालम बिदेश को पयान कीन्हो ता दिन ते ताको अभिलाख रही सोने मैं। काहू कह्यो आयो परदेश ते तिहारो नाह बैठी हुती बाल जरतारी के बिछौने मैं॥ कहै नंदराम सुनि आगम अनोखो बाम अंग के अभूषण उतारै लगी लोने मैं। बारन ते मुकुता हजारन निकारि धरे खासे खासे अम्बर उतारि धरे कोने मैं॥ १२९॥

दोहा।

तन गरीब को कै रही मन अमीर को बाम।
बड़े भाग जो भावते आये घर घनश्याम॥ १३०॥

इति श्रीनंदरामकृते शृङ्गारदर्प्पणे दशनायिकावर्णनो नाम चतुर्थः प्रकाशः।

अथ उत्तमादि नायिका कथन दोहा।

त्रिबिधि नायिका और हैं प्रथम उत्तमा नारि।
तथा मध्यमा जानिये तिमि अधमा निरधारि॥१३१॥

अथ उत्तमा को लक्षण दोहा।

नैनन हूं लखि पावई पीतम-कृत अपराध।
तजै न मन मैं उत्तमा करत मान की साध॥ २॥

सवैया।

घर आये कहूं रमि कै मनमोहन ईंगुर रंग रँगो पट

चीन्हो। उठि आदर सो मनमोहनी कन्त को कंज सिरीष सों आसन लीन्हो॥ लपिटाइ गई नँदराम सों आपने भाल को सेंदुर त्यों पट दीन्हो। सखि कौन कहै गुण उत्तमा के जेहि कन्त के दूषण भूषण कीन्हो॥ ३॥

दोहा।

यद्दपि बहु बनितान सों रमत करत अपमान।
शीलमई के प्रानपति तज प्रान के प्रान॥ ४॥

अथ मध्या को लच्चण दोहा।

पीतम को अपराध लखि होत मानिनी जौन।
तजै मान लखि कन्त को दुखिता मध्या तौन॥ ५॥

अथ मध्या को उदा० कबित्त।

लटपटी पाग त्यों उनीदे नैन मोहन के देखि पीतपट कछु औरही बरन को। मान कियो मानिनी महान त्यों न मानत हैं कारे नंदराम करि केतिक जतन को॥ पावक सी पाग प्यारे नाई पग प्याले पर तोप कैसो गोला गो निसरि मान मन को। अंग भरि लागी नंदलाल सों मयंकमुखी बीजुरी सी बाम ना तजत श्याम घन को॥ ६॥

दोहा।

कहहुँ मान मैं कवन बिधि ये न करत कुच हारि।
छुवत अंग नंदलाल को मिलत कंचुकी फारि॥ ७॥

अथ अधमा को लच्चण दोहा।

कटुक बचन पति सों कहै आदर किये रिसाइ।
अतिसय अधमा नायिका ताहि कहैं कबिराइ॥ ८॥

अथ अधमा को उदाहरण कबित्त।

घर घर घूमि घूमि हम कों लजावत हो आवत बनावत न जानो कछु जानहीं। लोक को न लाज ना अकाज पर लोकहूं को मानत कुचालि आली कहां लौं बखानहीं॥ एक को हजार कहि थाको नंदराम कहा कहैं मेरी कही नेक उर में न आनहीं। बंद करु कोठरी में लंगर लबार को तू लातन के देव नाहिं बातन सों मानहीं॥ ९॥

दोहा।

प्रानपियारे को कहा करत अरी अपमान।
फिरि रूसे नँदलाल के मान होइगो बान॥ १०॥
कही नायिका मैं कछुक निज बलबुद्धि बिचारि।
अब नायकबरनन करों अपनी मति अनुसारि॥ ११॥

अथ नायकलक्षण दोहा।

गुणी धनी मानी तरुण कोटि काम कमनीय।
कामकला कबि कुशल हो सो नायक बरनीय॥ १२॥

अथ नायक को उदा॰ कबित्त।

सुन्दर सुजान घनश्याम अभिराम कोटि काम छबि हा· रक बिहारक बिसाल है। कहै नंदराम राग रंग में प्रबीन

मीन पीन बनितान प्रेम सागर को जाल है॥ नेह को नि-
धान नट नागर छबीलो छैल छाजत छटान कामिनीन कंठ
माल है। चन्द ते दुचन्द अरिबिन्द ते अनूप अति आनद
को कन्द ब्रजचन्द नन्दलाल है ॥ १३ ॥

दोहा।

काम कौन बिधि कौन है को अश्विनीकुमार।
श्यामहि बिरचि बिरंचि को भूलो रचन-बिचार ॥१४॥

अथ नायक भेद बरणनम् दोहा।

नंदराम ये भेद हैं नायक के सब ठौर ।
पति उपपति वैसिक बहुरि कहत रसिक सिरमौर १५
लोक वेद बिधि सों बिहित होत व्याह जेहि केर।
सो पति है यह जानिये कबिजन करत निबेर ॥ १६ ॥

अथ पति को उदाहरण कबित्त ।

सोभित सलोनी दुलहीनि चुनि चौक पर दुल्लह दुचन्द
नन्दनन्दन सो जोरि हौ। केसरि कि बोरी पाग जामा पा
यजामा पीत सारी जुतनारी रति मार मद मोरिहौ ॥
आली कह्यो कान लागि येहो नंदराम दृग ताप ते तपित
रूप सागर हिलोरि हौ। छोरे ते न छूटत जो कान्ह कर
कंकन तौ कौन भांति फेरि फुफुदी की फूंद छोरि हौ॥१७॥

दोहा।

भरत भावरी भावते गयो भूलि तन भान।
घूंघट में मन घुसि रह्यो घरी घरी जुग जान॥ १८ ॥

अथ पति भेद बर्णन दोहा।

चारि भेद पति के कहत प्रथम सो है अनकूल।
यहि बिधि दच्छिण धृष्ट सठ लच्छण लच्छ अतूल ॥ १९ ॥

अथ अनकूल को लच्छण दोहा।

सदा आपनी नारि सौं रमत परम हित मानि।
पर नारी प्रतिकूल अति सो अनकूल बखानि ॥ २० ॥

कबित्त।

रूपरासि रमनीय दीह दुख दमनीय कामहू ते कमनीय प्रीति सरसाइ कै। है कर सो लपिटाय है कर कुचन लाय वाही चोप चाय चारि बाहन बनाइ कै ॥ कहै नन्दराम त्यौं जगाइवे के आइबे के छोभ छण छांह शेसफन की तनाइ कै। कोटि कामकामिनी सी कमला करेजे लाइ सोइ रहे हरि छीरसागर मैं जाइ कै ॥ २१ ॥

कबित्त।

शंकर जू शैलजा को प्रानहू ते प्यारी अरधंग करि फटिक सिला मैं मुख जोवती। खैंचि कै सुधाकर सुधाकरमुखी पै धरैं धरत न धीर सुधाधार मैं भिगोवती ॥ नंदराम दाहिने भुजंग भूत भासमान गरे भालमाल प्रीति रस मैं समोवती। पौढ़िवे कि चाह जब होत महादेव जू को दाहिनेई गिरिजा गिरीस गिरि सोवती ॥ २२ ॥

दोहा।

कंकर करि छोड़त नहीं शंकर दिनकर काज।
भामिनि को मुख जोवते हँसत सखी सिरताज ॥२३॥

अथ दक्षिण नायक को लक्षण दोहा।

बहु नारिन सों हित रहै जाको सम अनुराग।
सो नायक दक्षिण कहत सुन्दर सुमति अदाग ॥ २४ ॥

अथ दक्षिण को उदाहरण कबित्त।

दौरि आईं नारी बनवारी को बिलोकि सारी निज निज रुचि बोली आनँद की बारी मैं। कोई कहै कान्ह चलि खेलो मेरे मन्दिर मैं कोई कहै खेलो चलि मेरिऔ अटारी मैं॥ नंदराम मेरे भौन गौन करो कोई कहै बोले घन-श्याम सब बाम रुचि कारी मैं। काल्हि चलि खेलिहौं तुमारे धाम धामन मैं आजु चलै खेलैं खेल म्हारी फुलवारी मैं ॥ २५ ॥

दोहा।

अपने अपने घरन ते देखैं नागरिवृन्द।
नंदराम निज महल पर बने दैज के चन्द ॥ २६ ॥

अथ धृष्ट को लक्षण दोहा।

डरै न निज अपमान को नहिं कामिनि के मान।
व्रीड़ा को पौरा नहीं नायक धृष्ट प्रमान ॥ २७ ॥

अथ धृष्ट को उदाहरण सवैया।

जौह थकी कटु बैन उचारत नैन थके सखि री सतरा

वत। त्यों नँदराम जू बाहेर काढ़ि कपाट के पौढ़ि रहै रिस छावत ॥ रंचक नींद परै जबहीं तबहीं ढिग पौढ़ि मुखै मुख लावत। का कहिये निरलज्ज की बातन मैं निसि मैं नहिं सोवन पावत ॥ २७ ॥

अथ दोहा।

ये ढंग इनके देखु सखि फिरि फिरि करत गुनाह।
मारे पर पायन परत कहा कीजिये आह ॥ २८ ॥

अथ सठ नायक को लक्षण दोहा।

मुख मीठी बातें करै अंतर छुरी समान।
निपट कपट उर मैं बसत सठ नायक सो जान ॥२९॥

अथ सठ नायक को उदा० सवैया।

आजु गई सतिभाइ चली जसुदा के निकेत मिले बनवारो। पीत पटा धर दै कै चटा तहँ लै गयो मोहि अटा की अटारी ॥ त्यों नंदराम सुधा ते सिरै करि बातें भले करनी यह सारी। दौरि अचानक अंक भरी सठता करि कै सठ कंचुकी फारी ॥ ३० ॥

दोहा।

बालक सों तुतुराइ कै मीठे वचन सुनाइ।
छाती मै छत करत है तासों कहा बिसाइ ॥ ३१ ॥

अथ उपपति को लक्षण दोहा।

पर बनितन सों जोर मैं निज बनिता बहराइ।
तासों उपपति कहत हैं कबि कोबिद समुदाइ ॥३२॥

अथ उपपति को उदारहण कवित्त ।

लागि गये नैन चैन आवत न रैन दिन मेरी जान ऐन मैन मैन की छड़ी हती । कहैं नन्दराम जोम जोबन जलूस और जेवर जड़ाव नखसिख लौं जड़ी हती ॥ फूलन के हारन में हारहरे हीरन के ताह में बहारदार चौलरी पड़ी हती । सिर की सुरंग सारी छिरकी सुगन्धन सौं खिरकी के बीच बाल हिरकी खड़ी हती ॥ ३३ ॥

दोहा ।

भ्रू कमान दृग बान बर खैंचि श्रवन लगि नारि ।
दाबि दसन सों अधर मृदु गई करेजे मारि ॥ ३४ ॥

अथ बैसिक लक्षण दोहा ।

तन मन धन ते होत है बारबधू बस जौन ।
लोकलाज मरयाद तजि बैसिक नायक तौन ॥ ३५ ॥

अथ बैसिक नायिक को उदाहरण सवैया ।

नित बार बधून के वार हजारन वार अवार सवार ठनै ।
सब छोड़ि अचार बिचार दयो उपचार लचार न होत मनै ॥
दृग आनन चन्द्र चकोर किये नंदराम रहैं रसही में सनै ।
तन ते मन ते धन ते धन पै तनहूं मनहूं धनहूं न गनै ॥३६॥

दोहा ।

पिक से प्यासेई रहत बिछुरत होत मलीन ।
तिय मुखचन्द चकोर के हैं तन पानिप मीन ॥३७॥

तीनि भेद औरौ कहत नायक के सब ठौर ।
मानी बचनन को चतुर क्रियाचतुर पुनि और ॥३८॥

अथ मानी लक्षण दोहा।

जबहि नायिका सों करत नायक गरू गुमान ।
तासों मानी जानिये याकों यही निदान ॥ ३९ ॥

अथ मानी नायक को उदाहरण कवित्त।

जानती हौं जान ती है जेठ की जलाकन में आजु के मनाये चौगुनो जो मान करिहौ । कहै नन्दराम नन्दलाल आजु पाला तौन आला हूं ते आला ब्रजबाला को निदरिहौ ॥ घेरि है घनेरी घटा घमकि घुमेड़ी घन घायल से घूमि घूमि घनश्याम डरिहौ । प्यारी पाँइ परत मनाये ते न मानौ फेरि प्यारी को मनाइवे कों मेरे पँाय परिहौ ॥ ४० ॥

दोहा।

जो करती तौ जेठ मैं फागुन अधिक अयान ।
झरि जैहै पतिझार में माधौ तुमरो मान ॥ ४१ ॥

अथ बचनचतुर नायक को लक्षण दोहा।

चतुराई के बचन कहि करै आपनो काज ।
बचनचतुर नायक सोई कहत सो कबि सिरताज ४२

अथ बचनचतुर नायक को उदा० कवित्त।

प्यारी को सुनाइ कै कहत श्याम ग्वालन सों आजु मति आंइयो हमारो संग लाइ हैं। जंत्र मंत्र तंत्र को विधान तौ

इकन्तही में बनत दुराये ते बिसेष फलदाइ हैं ॥ कहै नंदराम कामना को कलपद्रुम है याको सिद्ध पाये ते असेष सिद्धि पाइहैं । योग जमघट के अकट के विकटबन बंशी बट तट एक मंत्र को जगाइहैं ॥ ४३ ॥

दोहा।

क्यों इत उत खोजत फिरत राधा अधिक अधीर।
बहँके बछरा चलि गये कालीदह के तीर ॥ ४४ ॥

अथ क्रियाचतुर नायक को लक्षण दोहा।

प्रगट चातुरी जो करै कछू कर्म्म के माह ।
क्रियाचतुर नायक सोई बरनत हैं कबिनाह ॥ ४५ ॥

अथ क्रियाचतुर नायक को उदा॰ कबित्त।

बैठी हुती बाल चुनी चाँदनी सी चौक चारु चारी ओर चातुर सहेलीगन भायो है । कहै नंदराम कामकामना कलित कल केहू मिस काम के कहूँ ते कान्ह आयो है ॥ जानिवे सहेट हेत चोखी चतुराई करी याही ते कन्हाई क्रियाचातुर कहायो है। पीतम कसौटी पर कंचन लकीर लाई प्यारी ने धरा में नीर-धार धरकायो है ॥ ४६ ॥

दोहा।

दधिबेचन बेला निरखि मोहनि की घर आइ।
ऊँचे सीके पर धरी अरी कमोरी जाइ ॥ ४७ ॥

दोहा।

औरी ग्रंथन की मती प्रोषित नायक होत।
ताके लच्छण लच्छ ये अब मैं करत उदोत॥ ४८॥

अथ प्रोषित नायक को लच्छण दोहा।

बिन प्यारी परदेस में नायक जो अकुलात।
सोई प्रोषित जानिये कहत सो कवि अवदात॥४९॥

अथ प्रोषित नायक को उदा॰ कबित्त।

लोकन सवारी तौ सवारौ ना बिगारी कछु लोकन सवारि नरनारि ना सवाँरतो। कीन्हो नर नारि तौ न प्रेम को प्रचार कीन्हो प्रेम को प्रचार तौ न मैन को प्रचारतो॥ मैन को प्रचारो तौ प्रचारो ना सँयोग देतो कीन्हो जो सँयोग तो बियोग ना बिचारतो। नंदराम कीन्हो जो बियोग बिधना तौ भूलि बौरे बनबागन बसन्त ना बगारतो॥५०॥

दोहा।

तारपति की जोइ जग जगत जोन्हाई जोति।
बिन प्यारी परयंक मैं शरद करद सी होति॥ ५१॥

इति नायकबरणनम्।

इति श्रीनन्दरामकृते शृङ्गारदर्प्पणे आलंबनविभावे नायकबरणनम् पंचमः प्रकाशः॥ ५॥

सोरठा ।

दर्शन चारि पवित्र, नंदराम हरि के कहत ।
श्रवन स्वप्न अरु चित्र, पुनि प्रतच्छ हिय जानिये ॥ १ ॥

अथ श्रवनदर्शन सवैया ।

आनन की मुसुकानि पै वारिये कोटि छपाकर को परछांही । भ्रू पर कामकमान कपान चितौनि पै नैनन पै मृग जांही ॥ त्यों नंदराम मनोहर मूरति की उपमा कहि के सकुचाहीं । कानन के मृग ह्वै निबसे उर कामिनि के निकसै हरि नाही ॥ २ ॥

दोहा ।

सखी चंद वह चंद नहि तेरोई मुखचन्द ।
बचनसुधा जाति कढ़त मम श्रुति कर आनन्द ॥ ३ ॥

अथ स्वप्न दर्शनम् कबित्त ।

सो गई निसंक आजु एरी परयंक पर बंक भौंहवारो मोहि अंक मो लगा गयो । मुरली मुकुट कटि तट पीत पट तैसे अटपटी चाल चित मेरो उरझा गयो ॥ कहै नन्दराम मुरि मंद मुसुकाय नेक समुझि न पायो कछु कान में सुना गयो । आ गयो अचानक देखा गयो मयंकमुख हा गयो कितै को मोहि सोवत जगा गयो ॥ ४ ॥

दोहा ।

सपने में सैंसुक करत बोल्यो बोल अचैन ।
सो सपनो झूंठो भयो सांचे पिक के बैन ॥ ५ ॥

अथ चित्र दर्शन कबित्त।

मुरली मैं मुख मैं त्यौं मंद मुसकानहि मैं मौहन मैभाल मैं बिलोकनि बिसाल मैं। कुंडल किरीटह्न मैं नैन खंजरी-टह्न मैं केसर के छीटह्न मैं बेस बनमाल मैं॥ कंठ कटि-काछनो मैं कुंडल अवाछनी मैं भीके नायिका के नैन लागी नंदलाल मैं। नंदराम देखत बिचित्र चित्र नौको हाल चित्र की लिखी सी भई देखि चित्रशाल मैं॥ ६॥

दोहा।

बड़ो चोर ब्रजराज है कहे काहु नहिं खोरि।
चित्रहु में सखि जो लयो चित्त हमारो चोरि॥७॥

प्रत्यच्च दर्शनम् सवैया।

मोर-किरीट मनोहर कुंडल मंजु कपोलन पै अलका-ली। पीतपटी लपटी तन सांवरे भाल पटीर को रेख रसा-ली॥ त्यों नंदराम जू बेन बजावत आजु लखे बन में बन माली। नैन उघारिबे को मन होत ना मोहन-रूप निहारि के आली॥ ८॥

दोहा।

ना जानौं सखि प्रगट भो कौन पुन्य को पुंज।
गुंजमालधर हरि लखे आजु सांकरी कुंज॥ ९॥

इति श्रीशृङ्गारदर्प्पणे आलंबनविभावे दर्शनकथनम् षष्टमप्रकाशः।

उद्दिपनबिभावकथनम् दोहा।

आलंबनहि बिभाव को कह्यो यथामति गाइ।
उद्दीपन सुविभाव को अब बरनौं चित चाइ ॥ १ ॥
जाहि समागम होत है उर में उदित अनंग।
ताको उद्दीपन कहैं सतकबि सरस प्रसंग ॥ २ ॥
सखा सखी दूती चतुर षटरितु उपबन पौन ।
इनहि आदि औरौ बहुत समुझति हैं मतिभौन ॥३॥

अथ सखा बरणनम् दोहा।

तेई नायक के सखा जो जानत सब भेद।
निज मति के अनुसार सो हरत दोहुंन को खेद ॥४॥
चारि भांति सो जानिये कविबर करत बखान।
पोठमर्द विट चेटकहु बहुरि बिदूषक जान ॥ ५ ॥

अथ पीठिमर्द को लक्षण दोहा।

मोचै मोदक बात कहि मानवती को मान।
पीठिमर्द तासों कहत कबिकुल सुमतिनिधान ॥ ६ ॥

अथ उदाहरण कबित्त।

देखो तौ झरोखन झकोरन झकोरै पौन झांपन मैं झालरि मैं झीली झहराति है। कहै नंदराम कारी काजर सी घूमि घूमि उमड़ि घुमड़ि घन घटा घहराति है ॥ तड़-पि तड़पि दिवि मंडल मैं दौरि दौरि छिति को छुवत छुरि

छटा छहराति है। नागरि नवेली अलबेली चलु नागर पै कैसे कै अकेली तोसैं राति बहराति है॥ ७॥

दोहा।

मान कीजियो और दिन तब करियो भ्रूव बंक।
बरबस अथयो जात है राकारजनि मयंक॥ ८॥

अथ विट को लच्छण दोहा।

दूतपनो करि दुहुन को मिलवै रस उपजाइ।
कामकला में अति चतुर सो विट कह कबिराइ॥

अथ विट को उदाहरण कवित्त।

आस पास बाल के रसालन के बाल इन्द्रजाल सों बिसाल बौरे बागन बनाइ कै। बोलि बोलि बोली कलकंठ को कपोतन को डोलि डोलि डोलो डर डारन डोलाइ कै॥ कहै नंदराम तैसे सुरभी समीरन सों मानिनी के मन मों मनोज उपजाइ कै। जाइ कै बजाइ कै बिथा के गीत गाइ कै सो नागर को दीन्हीं नव नागरि मिलाइ कै॥ १०॥

दोहा।

आजु हमारी ओर लखि चली खेलनै फाग।
उन पै तुम जनि डारियो रंग सहित अनुराग॥ ११॥

अथ चेट को लच्छण दोहा।

चतुराई कहि व्याज ते पठवै तिय संकेत।
चेट सखा तासों कहत कबिबर सुमतिनिकेत॥ १२॥

अथ चेट को उदाहरण सवैया ।

भूलि गईं सगरी सखियाँ अरु जान्यौ कि राधिकाहू द्रुत आवै । ठाढ़ो ह्वै मारग में नंदराम कहै हँसि बैन कछू डर पावै ॥ ये उनये घनश्याम अरी कोउ चोरि लै जाइ कहा बनि आवै । कीरति को डर तोहि नहीं फिरि कंचन पैजनी क्यों नहिं लावै ॥ १३ ॥

दोहा ।

भजो जात मैं छिनक को राधा तोहिं जनाइ ।
पीछे आवत कान्ह है दौजी मोहिँ न बताइ ॥ १४ ॥

अथ विदूषक को लक्षण दोहा ।

हरखावै डरपाइ कै करिकै स्वांग विचित्र ।
सोइ बिदूषक जानिये हरि को मोदक मित्र ॥ १५ ॥

अथ विदूषक को उदाहरण सवैया ।

धाइ के धाम बोलाइ के सांवरो दौरि विदूषक राधिका आनी । एकहि भौन में दोउन को करि आपु गयो चलि पीवन पानी ॥ त्यों नन्दराम कहा कहिये अबहू लौं हँसी हिय सो न हिरानी । सोसनी घाघरो बेसरि पैन्हि कै आइ गयो बनि कै नंदरानी ॥ १६ ॥

दोहा ।

होत हरष में अति हरष सुमिरि विदूषक ढग ।
सही बात रस होत है मिले रंग मो रग ॥ १७ ॥

इति सखा ।

अथ सखी वर्णनम् दोहा।

सकल हाल कहि देत हैं राखत कछु न छिपाइ।
दंपति जिनसों ते सखी भाषत कबि कविराइ ॥ १८ ॥
चारि काम सखियान के पण्डित करत प्रकास।
मंडन त्यों सिचा बरन उपालंभ परिहास ॥ १९ ॥

अथ मंडन को लच्चण दोहा।

मंडन तासों कहत हैं कवि कोविद समुदाइ।
करत अंगरचना बिबिधि भूषण बसन बनाइ ॥२०॥

अथ मंडन को उदाहरण कबित्त।

नागरि नवेली अलवेली को सवाँरि सखी जेवर जलूस·वारि जे तरे जहान है। कहै नन्दराम तहीं आनन विलो·किवे को आगे धरो आनि मंजु मुकुर महान है। मुख प्र·तिविंब परे आरसी में आरसी को तेज ताहि समै मुख मध्य दरसान है ॥ एक ओर मानो रविमंडल समान्यो चन्द्र एक ओर मानो चन्द्रमंडल मैं भान है ॥ २१ ॥

सवैया।

जावक सों नँदराम सखी पद खासी ते खासी न खासी निसारति। कंचन के बिछुआ पहिराइ कै दोहरी तेहरी जेहरी डारत ॥ नोठि कियें दृग है उर डीठि के पायनहू को सवारि सवारत। कारो लियो कजरा अपनी अँगुरीन मैं तौहुं न ऊँचे निहारत ॥ २२ ॥

साजे नई दुलही को सखी सिर ओढ़नी टारि उरोज धरी है । त्यौं नंदराम प्रभा बिकसी मुखचन्द ते चारु मरीचि भरी है ॥ कै सटकारि सुकारे महाँ तेहि बीच सिंदूर कि मांग भरी है । मानो सुधानिधि मारि भली यह राहु के तौ तरवारि परी है ॥ २३ ॥

सखि साजे सिंगार छबीली के अंग जो मैंनहुं को मद मोरती है । तिल मै न तिलोतमा जाकी तुलै तरुनापन पै त्रन तोरती है ॥ नंदराम जू बेंदी जराय जरी बर बाल के भाल सिधोरती है । कमलाकर चन्दकला को लिये सो कलानिधि के मुख जोरती है ॥ २४ ॥

अथ शिक्षा को लक्षण दोहा ।

कै नायक कै नायकहि उपदेशत जो ढंग ।
ताकों शिक्षा कहत हैं कबिजन कबित प्रसंग ॥२५॥

अथ शिक्षा को उदाहरण कबित्त ।

मंद मंद एरी तू गयन्दन की छंदन सों नंदराम धाम धाम झूमत फिरत है । बोलि बोलि आलिन के संग मग डोलि डोलि खोलि खोलि अंग मुख चूमत फिरत है ॥ मानिहै न मेरो कह्यो जानो मैं तिहारो बात मेरे कहे तेरो कछु मति ना फिरत है । परि जैहो जार कैरे जार मैं बजार कहूं बाट परो बाट बाट घूमत फिरत है ॥ २६ ॥

दोहा।

अरी जात क्यों कुंजबन घरी घरी तजि गेह।

फिरि न कछू बनि आइहै कहुं लगि जाय सनेह ॥२७॥

अथ उपालम्भ को लक्षण दोहा।

दूहुन देइ ओराहनो सूचित करि अपराध।

उपालंभ तासों कहत कबिकुल सुमति-अगाध ॥२८॥

अथ उपालंभ को उदा॰ कबित्त।

ईछन तिहारे तीर तीछन से जाने जात नंदराम तैसे भ्रू सरासन में जोरे हैं। औन लौं सलोने तानि ताकि नँद नंदन सों छोड़ि कुलकानि लोक-लाज के चितोरे हैं। जा दिन ते औंचक अनोखी तैं निहाख्यो नेक हौंहूं पछितातिहाय नाहक निहोरे हैं। तादिन ते लाल मेरो उलटि उसांसैं लेत मै न जानी तेरे नैन-बान बिषबोरे हैं ॥ २९ ॥

होत नाहि चेत वा अचेत परी चांचरि मैं तेरो नाम लेत लोकलाज परि आये हौ। नंदराम केहूं ना कराहि कै करौंट लेत ऐसो चोट चित्त में अचाक करि आये हौ॥ आछौ करौ हाल चलि आछो तौ बनैगो बात मेरी जीवजीवनि पै जादू डारि आये हौ। ऐसो तुमै बूझिये न लाल जू गुलाल केरी मूठि मारि आये कैधौं मूठि मारि आये हौ॥

दोहा।

एरी लट लांबी कसै उरजन पै लहराति।

मेरे मदनगोपाल कों नागिनि लौं डसि जाति ॥३१॥

परिहास को लक्षण दोहा।

कछू हँसी की बात मैं तिय लज्जित ह्वै जाइ।
ताहि कहत परिहास हैं कवि कोबिद समुदाय ॥३२॥

अथ परिहास को उदारहण सवैया।

आई सखी करि बेख गोपालको पौढ़ि रही परयंक पै जाइ कै। त्यों नंदराम जू प्यारी गई नंदनंद को जानि अनंद बढ़ाइ कै ॥ प्रीति सों लीन्हों पितम्बर सो करि आतुर कंचुकी मैं करलाइ कै। अंक में लावत लाज लजाइ रही है मयंकमुखी मुख नाइ कै ॥ ३३ ॥

दोहा।

प्यारी लाइ सुगन्ध लै पिय मुख मंडन वार।
समुझि हेत बिपरीति को लाज लजानी दार ॥ ३४ ॥

इति सखीबरणनम्।

अथ षटऋतु बर्णन बसन्त कबित्त।

असन मैं आसन अकास मैं अवासन मैं आलिन मैं आलिन की आलिन मैं दौरि गो। कहै नन्दराम त्यों बिहंगन मैं बागन मैं बन मैं बिनोदन मैं बौरन मैं वौरिगो ॥ छिति मैं छबीलिन मैं छपा मैं छपाकर मैं छतिन मैं छातिन मैं छेकि छल छोरिगो। देखुरी बसन्त मैं बतावत हैं कन्त मैन ससि सरसन्त मैं अँगारन बिथोरिगो ॥ ३५ ॥

फेरि वैसे कुंजन में गुंजरन लागी भौर फेरि वैसे कोलि-या कुबोलन ररै लगी। फेरि वैसे पातन पै परिगो पराग पीत फेरि त्यों पलासन में आगि सी बरै लगी॥ फेरि वैसे पपिहा पुकारै लगी नन्दराम फेरि वैसे धाम धाम सौरभ भरै लगी। फेरि वैसे ऊधमी बसन्त बिसवासी आयो फेरि वैसे डारन में डाक सी परै लगी॥ ३६॥

आयोरी बसन्त कूकि कोलिया पुकारै लगीं हम सी ग-रीबिनी को गात गारि डारैंगी। मन्द मन्द मारुत सुगन्ध सरसान लगी ज्वाल को जगाइ कै जरूर जारि डारैंगी॥ नन्दराम बागन में फूलै लगी बेलीबन करिकै अधीरिनी सु-धीर टारि डारैंगी। येरी तसबीर तौ देखा दे मोहिं मोहन की आखिरि कदम्बन की डारैं मारि डारैंगी॥ ३७॥

जालिम जुलमदार जाहिर जहान जौन डगर डगर बिष बगर बगारिगो। कहै नन्दराम ब्रज गांउ की गरी-बिनीन रावरे कि चेरिन पखेरिन को मारिगो॥ ऊधौ जो हवाल कहि दीजौ नन्दलालजू सों गोकुल की गैल गैल गजब गुजारिगो। फूले ना पलास ये पलास कै बसन्त-बाज काटि कै करेजा डार डारन पै डारिगो॥ ३८॥

दोहा।

ये पिक पापी बोलहीं करत कलापी शोर।
उर सालत नटसाल सी बानी मधुर मरोर॥ ३९॥

इति बसन्त।

अथ ग्रीष्म कबित्त।

नदिन मैं नारन मैं नारंगो अनारन मैं नवल निवारन मैं तीर बदले गये। नन्दराम ग्रोषम गुसा मैं गरमी मैं गैल गहब गुलाबन सों अंग मुसले गये॥ ऊसर के अंगन मैं नीर नदी रंगन मैं तरल तरंगन मैं हरिन छले गये॥ हिमगिरि मन्दर मैं हिमगिरि अंदर मैं कन्दर के अंदर में बन्दर चले गये॥ ४०॥

चौक मैं चटक चांदनी मैं चारु सेज सारु नारन के ऊपर सेवारन बिछाय दे। चन्दन को चहल चंवेली के अतर घोरि घनी घनसारन चहूंवा छिरकाय दे॥ कहै नन्दराम तैसे बोरि कै सुगन्धन सों हौरे हौरे बेगि बेस बीजना हलाय दे। गहगहे गहब गुलाबन के गंज गुहि गजरा गरे गरु गुलाब गलकाय दे॥ ४१॥

इति ग्रीष्म समाप्त।

अथ बर्षा वर्णनम् कबित्त।

गरजैं ना मेघ तोम तरजैं ना छूटि छटा लरजैं ना लौंग लता दादुरि दरारैं ना। बोलैं ना कलापी ये कदम्बन की डारन पै कूकि कूकि कोकिला कुठारन सों मारैं ना॥ कहै नन्दराम मेरो कह्यो मानु मेरो भटू बन्द करु भौरन सों झौली झनकारैं ना। प्रानन को प्यारो परदेश में परो है पीव पावस मैं पापी ये पपीहरा पुकारैं ना॥ ४२॥

आवैं ना बलाक पिय गावैं ना बिथा के गीत धावैं ना धरा पै धौल धारा धधकारैं ना। छावैं ना छराक छिति छोर लौं छबीलो छटा छन्दन छपा मैं पौन डारन डहारैं ना॥ कहै नन्दराम हौं पछारी परी ग्रीषम की तीषन तेहू पै बुंद बानन सो मारैं ना। इन्द्र ते कही को मैं मरी हौं आपुही ते अब रकत चभोरी तरवारि सो निकारैं ना॥ ४३॥

मालती वितान पर भौंरन निवास कीन्हों मन्द मतवारे मन्द मन्द सुर गावहीं। कहैं नंदराम जोर मोरन के शोर सुनि उरमै दरार होत झौली झहराव हीं॥ नद उफनात नदी नारन को जात घन घूमि घहरात नये नैरे नीर आ-वहीं! नज्जलन देखियत सज्जल जलद कारे कज्जल गिरीश कारे उपमा न पावहीं॥ ४४॥

चंचला की चमक चहूंघा चोख चायन सों चाहि चाहि चित्त मैं छपान चोट कै रहै। इन्द्र को सरासन सरासन सरस बान बुंद के बिधानन बिनोदन बितै रहै॥ कहैं नन्द राम तैसे चातिक चकोर जोर बोलि बोलि बरही बलाक बिष ब्वै रहै। आदर कै राखौं प्रान कैसे हुकम नादर लै जम के बिरादर ये बादर उनै रहै॥ ४५॥

देखो नन्दराम यह पावसी समाज जोरि आइगो मनोज महिमंडल समात ना। देखुरी घटाका घेर ह्वै रह्यो कटा-का सांज याहू ते घटाका जौन जीवन देखात ना॥ पटको

पटाका सुनि छाती मैं छटाका छत होत है झटाका हित टांका दरसात ना । जाइ है अटाका प्रान देखि कै अटाका रूप बिद्दुत छटाकारी चटाका सहि जात ना ॥ ४६ ॥

दोहा ।

कालाइ की कालिमा कुह्न कुह्न की चोट ।
ये पिक पापी मारहीं गहौं कौन की ओट ॥ ४७ ॥

अथ शरद कवित्त ।

चन्द्रमा प्रकासन मैं चन्द्रमुखी हासन मैं अवनि अकासन मैं कासन मैं छाई है । नंदराम तालन मैं इन्दीवर मालन मैं चंचरीक जालन मैं अधिक अमाई है ॥ माइता की डारिन मैं मालती कियारिन मैं फूली फुलवारिन मैं सौगुनी सोहाई है । काम कै सो खेतिन मैं बालुका समेतिन मैं सूरसुता रेतिन मैं सरद समाई है ॥ ४८ ॥

ह्वै रही तयारी महारानी रासमंडल को मल्लिका औ मालती ते अमित अपार हैं । कहै नन्दराम गई सारी सेत सारी साजि गोप की कुमारी हिये हीरन के हार हैं ॥ षोड़स कला सों आजु उदित कलाधर है चांदनी के भारन सों छोड़े अभिसार हैं । सेत चांदनी मैं सेत चांदनी चँदोवा तनै मानो छीरसिन्धु परे पारा के पहार हैं ॥ ५० ॥

खोड़स हजार बाल खोड़स सिंगार साजि खोड़स बरष बैस मुदित बिहार है । बांहन सो बांह जोरि मोरि मोरि

अंगन सों कीन्हीं मही मंडल अखंडल अपार है॥ कहै नन्दराम तैसे तार औ सितार मिलि चूरी खनकार सुर पंचम उचार है। भूतल दिसान बिदिसान आसमानहूं लौ छम छम छाई घूंघुरू की झनकार है॥ ५०॥

सवैया।

मल्हि मल्लिका मालती जाही जुही सुचि सेवती प्रान पियासी भई। चण्दा करकी करकाती भई बरषानि किती बर खासी भई॥ नंदराम जू चांदनी चौकन मैं चहुंओर ते भानु प्रभा सो भई। अखियांन मैं तौ बरखासी भई बरषान किती बर षासी भई॥ ५१॥

दोहा।

देखि देखि पूरन जगत जगत जोन्हाई जोति।
कासों दरद बखानिये शरद करद सो होत॥ ५२॥

इति शरद समाप्त।

अथ हिमन्त कवित्त।

आयो है हिमन्त जोर जाड़े के प्रसंगन सों रेसम के झंगन मैं अंगन दुराये देत। कहैं नन्दराम त्यों हमामहूं न काम सरै धाम धाम आला पौन पाला को उसाये देत॥ तूल पेट पोठिन अगीठिन मैं दीठि लागो तरुनी बिहीन तन कंप सरसाये देत। दूगनी कही तौ चित चौगुनी चुरत हेरि नौगुनो न सौगुनो समीर सोत नाये देत॥ ५३॥

आले आले असन मसाले भरे थाले तज प्याले पर प्याले दौरि दारू के भरा करै । कहै नन्दराम चाह चाह ले चतुरता सबासन पै बास लै खवासनै धरा करै ॥ वासे घनसार से तमासे से गलौरी दान कंचनन पान वे प्रमान लै करा करै । सासन हिमन्त को उदास न परत चित्त आसन के पास जो हुतासन बरा करै ॥ ५४ ॥

दोहा ।

तपन तूल तरुनी तरनि तिल तमोल तुक तार ।
रितु हिमन्त हारत नहीं बिन ये आठ तकार ॥ ५५ ॥

इति हेमन्त समाप्त ।

अथ शिशिर वर्णन कवित्त ।

आसव निराला भल भौन के निकाला देत प्याला पर प्याला तहूं सीत सरपेटे लेत । कहै नन्दराम जरै दीपन की माला लगी पेंच वो बिसाला धूम धाला अरपेटे लेत ॥ दोहरे दुशाला जन शाला कौन साला पट साला कोटसाला कोट साला गर पेटे लेत । बन्द किये ताला तोपे तूल के मसाला उर लगी वेस बाला तौहूं पाला झरपेटे लेत ॥५६॥

सवैया ।

जनि जाइये कोई कहूं कतहूं सखि फागुन के दिन आनि लगे । नन्दराम जू चौहटी चौकन में चलि चांचरि

चैन मचाने लगी ॥ मिलि गोपन के गन आने लगी गल गाहट गारिन गाने लगी । हरि केसरि को रँग लाने लगी बरसाने लगी बरसाने लगी ॥ ५७ ॥

दोहा ।

होतो कहां निबाह जग शिशिरि शीत के त्रास ।
जो बिरंचि बिरचित नहीं तिय कुच अगिनि अवास ॥

इति शिशिर समाप्त ।

अथ दूती बर्नन, दूती षटऋतु के पूर्ब चाहिये ।

अथ दूती लक्षण दोहा ।

दूतपने में अति निपुन चतुराई की खानि ।
कबि कोविद सब कहत हैं दूती ताहि बखानि ॥५८॥
उत्तम मध्यम अधम ते दूतो तोनि प्रकार ।
स्वयंदूतिका सहित पुनि कबिवर चारि बिचार ॥६०॥

अथ उत्तम दूती को लक्षण दोहा ।

सोधि सकल संसे हरत मीठे बचन सुनाइ ।
उत्तम दूती कहत हैं ताहि महा कबिराइ ॥ ६१ ॥

अथ उत्तम दूती को उदाहरण कबित्त ।

लाई हौं मनाइ मैं जरूर नंद नंदन को आपने सुचित प्ररयंक पै परी रहो । एक द्वै घरी में हद चारि छ घरी में नेक आवै ना प्रतीति हिये बाकत धरी रहो ॥ कहैं नन्दराम प्यारी तेरे मुखचन्द पर वारी बनवारो दोनो एकहो शरीर

हो। पांइ लागतो हो ताते देत मैं असीस तुम्हैं भाग औ सोहाग अनुराग सौं भरी रहौ ॥ ६२ ॥

दोहा ।

तो तन लखि सुत ओर लखि रबि सौं गोद पसारि ।
आजु कछू मांगत खड़ी मुदित नन्द की नारि ॥६३॥

अथ मध्यम को लच्छण दोहा ।

मीठ पुरुष मिश्रित बचन बोलै सहज सुभाइ ।
मध्यम दूती कहत हैं ताहि महा कबिराइ ॥ ६४ ॥

अथ मध्यम को उदाहरण सवैया ।

गुन रूप अनूप दियो बिधना जेहि गौरि गिरा बिसराइबे है। पहिले इतनी रिस कीबो कहा अब नाहकही पछिताइबे है ॥ उलटी पलटी बतियां तुमरी हमकौ तौ सबै गम खाइबे है। नन्दराम जू चारनचारन ते उत जाइबे है समुझाइबे है ॥ ६५ ॥

दोहा ।

चन्द बदन बानी सुधा अमल कमलदल नैन ।
बाट पारिहो कौन की हनि चितवनि शर पैन ॥६६॥

अथ अधमा दूती लच्छण दोहा ।

भूलि मधुर बोलै नहीं कटुक बचन की खानि ।
ताहि अधम दूती कहैं कबिकुल सकल प्रमानि ॥६७॥

अथ अधमा को उदाहरण सवैया ।

वेऊ भले तुमको तुमहूं उनको बहु भांतिन सौं सुख

देबो। त्यों नन्दराम जू बेर कुबेर भलो न भटू पर भौन को जैबो॥ लाई जो आजु मनाइ तौ लाज ते बांह गहे फिरि का पछितैबो। मोंहि गवार न है सजनी नित ऐसे गवाँरन को समुझैबो॥ ६८॥

दोहा।

लाउ लाउ रट लावते जात नाहि निज धाम।
कहँ वह सोन सलाक सी चैभंगी तन श्याम॥ ६९॥

अथ स्वयंदूतिका को लक्षण दोहा।

जहां आपनी बुद्धिबल करत आपनो काज।
स्वयंदूतिका वाहि को कहत सकल कबिराज॥७०॥

अथ उदाहरण कबित्त।

मोजा पतलून ते मलूम ना परत बाम जाकट बरान कोट हेरि होस हरि गयो। किर्च किये कर मैं कमर मैं कटार खोंसे टेढ़ी टेढ़ी ताज धरे मेरी दीठि परि गयो॥ कान्ह पै पहूंचा त्यों पहूंचा धरि लायौ धाइ भानु तनया की तरी तीर लौं निसरि गयो। नन्दराम धाम धाम बोलि जाइ बाला आजु कंस को सिपाही नन्दलाला को पकरि गयो॥ ७१॥

दोहा।

कहा कहौं सँग भाइ लै माइ माइके जात।
अति ओछो गृह भीति लखि हरि मम हियो डेरात॥

जुगुल काम दूतीन के कहत सकल कबिराइ ।
बिरहनिबेदन एक है संघट्टन पुनि गाइ ॥ ७३ ॥

अथ बिरह निबेदन संघट्टन को ल० दोहा ।

बिरहबिथा को भाषिबो विरह-निवेदन गाइ ।
बुधिबल दुहुंन मिलाइबो संघट्टन सो आइ ॥ ७४ ॥

उदाहरन कबित्त ।

स्वांस चंड आगि मारतण्ड को भभूकैं कहा तन-ताप जैसी तैसो अनल निसोती ना। छाइये बिछाइये कहां लौं कंज पातन को नैन नीर धार अंग अचल निचोती ना ॥ कहैं नन्दराम ऐसो बिकल परी है बाम रावरी दुहाई राति रातिन लौं सोती ना । आवती मैं दौरि रातही को रावरे के पास अश्रुन प्रवाह यमुना जो संधि होती ना ॥ ७५ ॥

विरहिनी सवैया ।

सौरे समीरन की वह झोकनि क्वैलिया कूकनि क्यों सहि जाइगी । कैसी बिहाल परी वह बाल तची तन तापन सो दहि जाइगी ॥ छांय कछू फिरि लागी है नानन्दराम हिये की हिये रहि जाइगी । हाल मिली नन्दलाल न तौ अँसुआन की धारन मैं बहि जाइगी ॥ ७६ ॥

दोहा ।

बरबस बिरह बलाइ मैं बरी जात वह बाल ।
चलि घनश्याम बुझाइये बरषि बचन सुरसाल ॥ ७७ ॥

संघट्टन को उदाहरण कवित्त ।

एक मैं तमाशा देखि आई आजु कुंजन में लीजे ना स-हेली संग ऐरी चन्द्रभागा सी। नागरि नवेली अलबेली वृ-षभान जू की चलिये अकेली बनवेली मैन बागा सी ॥ कहै नन्दराम योहीं मोहने मिलाइ जाइ दंपति बिहंग प-रिबे को लस लागा सी। राधिका कन्हाई दोज कंचन के टूक जैसे ता घरो में तामें तहां ह्वै गई सोहागा सी ॥ ७८ ॥

इति श्रीशृङ्गारदर्पणे उद्दीपन बिभावे सखा सखी दूती षट्ऋतु वर्णनम् सप्तम प्रकाशः।

अथ अनुभाव कथनम् दोहा।

जिनसों दम्पति के हिये रति को होत बिकाश।
ते अनुभाव सिंगार के पण्डित करत प्रकाश ॥ १ ॥

अथ सात्विक भाव दोहा।

स्तंभ कंप स्वरभंग अरु आंसू बिबरन जान ।
खेद पुलकता लीनता सात्विक आठ प्रमान ॥ २ ॥
अभ्यांतर अनुभाव में आठी सात्विक होत ।
नौम कहत जृंभासु कबि जे जग सुमति निसोत ॥३॥

अथ स्तम्भ को लच्छण दोहा।

भीति लाज आनन्द में थकित अंग जब होत।
स्तम्भ ताहि पहिचानिये कहत कबिन के गोत ॥४॥

स्तम्भ को उदाहरण सवैया।

भोर भये जल लैन चली वह गोकुल गांउ की गैल में गोरी। औंचक भेट भई नन्दराम परो उरमे लखि प्रेम ठगोरी॥ आहट पाइ के औरन की न भई मन की वहि सांकरी खोरी। मोहि गई न चलै न हिलै तन मान तजै वृषभानकिशोरी॥ ५॥

दोहा।

एक संग नंदलाल अरु नैनन पर्यो गुलाल।
हिचकि रही पिचिकी गहे प्रेम बिवस बरबाल॥ ६॥

अथ कंप को लच्चण दोहा।

आनँदही के क्रोध तें कै भ्रमही सों अंग।
कांपत अंग बखानहीं कविजन सरस प्रसंग॥ ७॥

अथ कंप को उदाहरण सवैया।

खेलन के मिस लै गई आली नई दुलही रति मंदिर काहीं। त्यों नँदराम रची सतरंज लगी मिलि खेलन आपुस माहीं॥ आइ कै बैठि गयो नंदलाल उठी बरबाल गही हरि बाहीं। कंपत गात कढ़ै नहि बात मरू करि आइ गरे लगि नाहीं॥ ८॥

दोहा।

प्रगट कोप अति कंप तन अंग अंग सरसात।
प्रात प्रानपति भाल में जावक रँग दरसात॥ ९॥

अथ स्वरभंग को लच्छण दोहा।

मद भय कोप अनंद तै बचन औरही रीति ।
होत जहां स्वरभंग सो बरनत कवि करि प्रीति ॥१०॥

स्वरभंग को उदाहरण सवैया।

मेघ इतो झरि कै बरषो नहिं आंखैं रहीं हमरी भरि खूनहि। यौं कहि प्रीतम की सुधि कै कहती जियरे निकसै कस तू नहिं॥ का नँदराम बिसूरतो हो छन तूरतो हो कछु कान करू नहिं। अंग अनंग ते तंग तयो स्वरभंग भयो कहि आयो कछू नहिं॥ ११ ॥

दोहा।

चतुर अली मग महँ मिली हंसि पूंछी कुशलात ।
सुरति चिन्ह अँग बिदित लखि मुखते कढ़ी न बात ॥

अथ वैवर्ण्य को लच्छण दोहा।

कोप मोह भय आदि तै रंग औरही भांति ।
होत अंग वैवर्ण्य सो बरनत कवि करि ख्यात ॥ १३ ॥

अथ वैवर्ण्य को उदाहरण कबित्त।

मोसौं क्यों न भाखात है आपनो हवाल आली ऐसी कौन बात जौन तेरो अंग छरिगो। जानी हम न्हाती तेरे तरनि-तनूजा तीर कारो बिषवारो नेक नैनन मैं परिगो ॥ कहै नंदराम तैं न जान्यौ लरिकाई बश मेरी जानि दूरिहि ते तेरो गात धरिगो। काबिस तिहारे अंग ठहरि गयोरी बाल काबिस को रंग तेरे तन मैं छहरिगो ॥ १४ ॥

दोहा।

ललिता के ताके अधर पीकवलित अरु नैन।
प्यारी मुख पीरी परी सुनत सखी के बैन ॥ १५ ॥

अथ अश्रु को लक्षण दोहा।

हरख शोच त्यों क्रोध भय धूमादिक तैं नैन।
प्रगट अधिक जल होत है अश्रु कहत मति ऐन ॥१६॥

उदाहरण सवैया।

उर नैकहु धीरज धारे नहीं कछु शोचि बिचारि के च्वैने लगे। दृग तैसे नये घन को लखि कै उनये घन की गति छूने लगे॥ कहि त्यों नंदराम जू मोरन सोरन चेति चकोरन चूने लगे। सखि नैनन में जल दूने लगे सखि सावन कैशर भूने लगे॥ १७॥

जौलौं उतै जुगुनू दरसै चिनगी इतैही तबलौं दरसैं लगीं। जौलौं समीर उतै सरसैं नन्दराम उसांस इतै सरसे लगीं॥ जौलौं जवास झरी झरसैं उतै तौलौं इतै छतियां झरसै लगीं। जौलौं घनेरी घटा बरषैं उत तौलौं इतैं अंखिया बरसै लगीं॥ १८॥

अथ स्वेद को लक्षण दोहा।

हरख कोप श्रम लाज तैं गात नीर के बिन्द।
प्रगट होंय तासों कहैं स्वेद कबिन के बृन्द ॥ १९ ॥

उदाहरन सवैया।

निरसंक ह्वै भावती को भरि अंक मयंकमुखी रति जूटी परै। सजनी श्रमसीकर की अवली मुख ते कुच कोर पै छूटी परै॥ नंदराम तहां तरुनी छबि पै जग मै उपमा सब खूटी परै। बिधु मंडल ह्वैकै ग्रहस्रमुखी मनो शंभु के सीस पै टूटी परै॥ २०॥

दोहा।

प्रगटै करत शोभा अमित श्रम सीकर तन बाल।
कनकलता ते प्रात जनु झरत ओसकन जाल॥२१॥

अथ रोमांच को लच्छण दोहा।

हरख शीत भीतादि तैं हरखत रोम शरीर।
ताहि कहत रोमांच कबि रसग्रंथन मतिधीर॥ २२॥

उदाहरन सवैया।

हेम के तार लोनाई के जंत्र मनोज सोनार किधौं करखे है। त्यौं नन्दराम जू कंचन क्यारिन रूप के अंकुर मै परखे है॥ लाल निहारतही तुमै रोम बरंगना अंगन मैं हरखे है। मैन महोप मनो बर बान शमेर की शृङ्गन पै बरखे है॥

दोहा।

शिशिरि न्हात यमुना लसत रोमांकुर कुचबेश।
देखत तप प्रगटे मनौं पुलकित जुगुल महेश॥ २४॥

अथ प्रलय को लक्षण दोहा।

देश काल तन लाज को रहै नही कछु ज्ञान।
तासो प्रलय बखानहीं कबि कुल सुमतिनिधान ॥२५॥

अथ प्रलय को उदाहरन सवैया।

लखि मोहनैं मोहि मिलाय कें शोच घने घने घायन घूंड़ि गई। अब और बिचार बिचारत ना मनु मैन महन्त सो मूंड़ि गई॥ नंदराम जू आपु गई सुखसिंधु हमें उपचारन कूंड़ि गई। तुम कौन को आली पुकारती हो वह सांवरे रंग में बूड़ि गई॥ २६॥

दोहा।

बंशी मैं भरि कौन बिधि दियो कान मों डारि।
सुनत भई तन प्रान बिन जो वृषभानकुमारि ॥२७॥
हाइ वृथा मैं लै गई गोकुल याहि बिहान।
हरि शिर मोरपखान को देखत भई पखान॥ २८॥

अथ जूंभा को लक्षण दोहा।

कै आलस कै मोह कै कन्त वियोगहि माहँ।
सुख विकाश करिबो जहां जूंभा कहि कविनाहँ॥२९॥

अथ जूंभा को उदाहरन कबित्त।

प्रात उठि आई केलिमन्दिर कें आँगन में चारी ओर देखो पुंज आलिन को धावते। कोई लिये भारी कोई पानदान वारो पानि पावन पखारि दियो बीरो रशनावते ॥